मंदिर मुक्ति अभियान 09
सनातन बौद्ध एकता का संदेश 10
महाकुम्भ में घुमंतू साधु-संत 11

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

39 वर्षों से निरंतर

पाथेय कण

फाल्गुन कृष्ण 4, वि.2081, युगाब्द 5126, 16 फरवरी, 2025

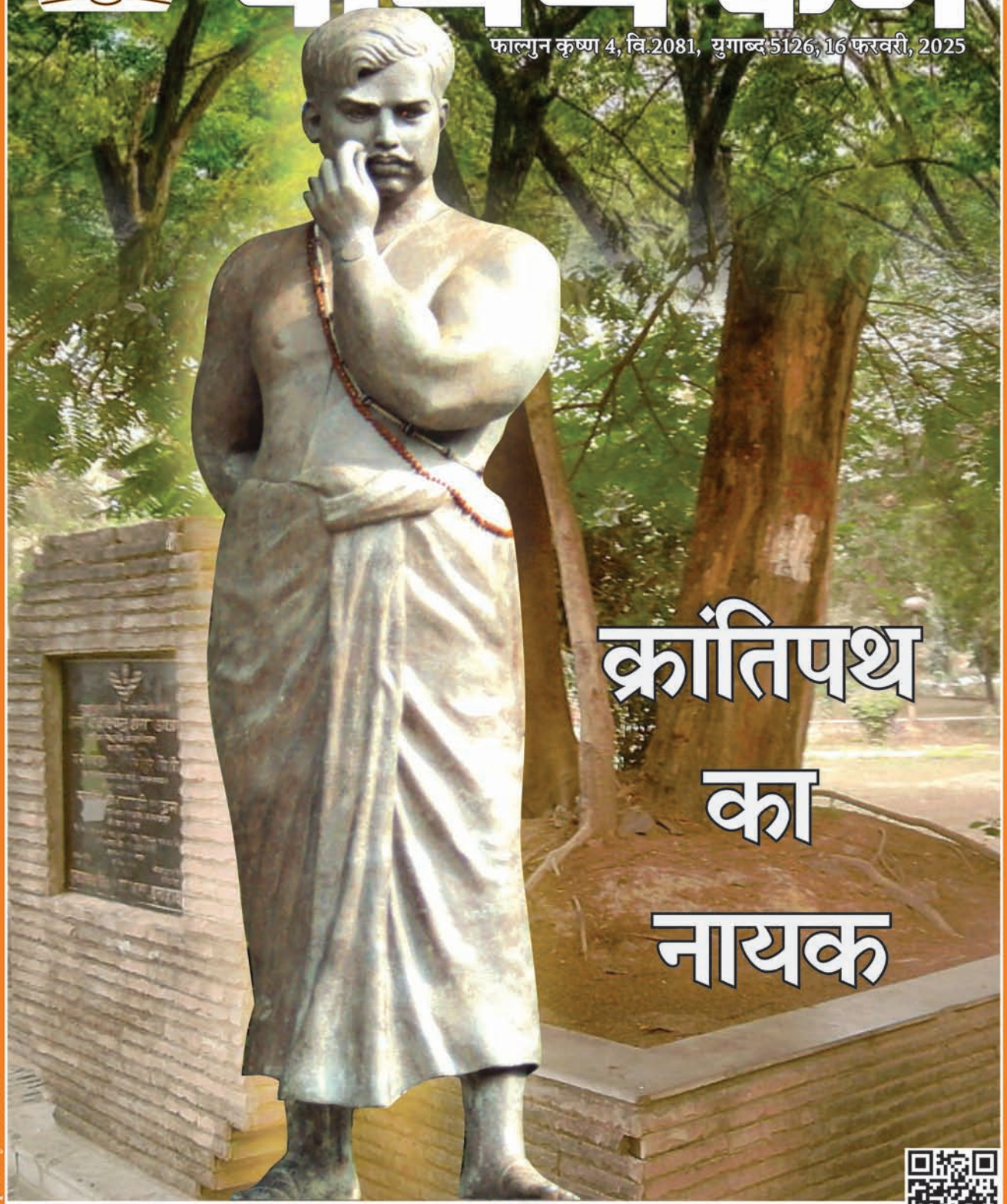

क्रांतिपथ का नायक

www.patheykan.com

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

विचारणीय

देश में जयपुर सहित अन्य स्थानों से हिन्दू पलायन की खबरें आ रही हैं। पलायन समस्या का समाधान नहीं? 'हिन्दू घटा-देश बंटा', यह हम सब सुनते आये हैं। पर एक सवाल! हिंदू समाज पलायन करते-करते कहां तक जायेगा? यदि भारत को सुरक्षित रखना है तो हिन्दू जनसंख्या को बढ़ाना पड़ेगा। देश की संस्कृति, भाषा, परम्परा मंदिर-मठ की सुरक्षा के लिए मजबूत संख्या भी चाहिए। भारत में हिन्दू घटा तो दुनिया भर के हिन्दुओं के लिए कौन बोलेगा? संघ के सरसंघचालक भागवत जी की जनसंख्या असंतुलन की चिंता वास्तव में विचारणीय है।

*-**दिलीप शर्मा**, श्रीमाधोपुर*

विशेषांक

पाथेय कण का 'महिला सम्मान एवं सुरक्षा' विशेषांक में डॉ.ऋतु सारस्वत का लेख 'सिनेमा के सामाजिक सरोकार' पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आजकल महिला अपराध के जो मामले बढ़ रहे हैं उनके लिए सबसे अधिक जिम्मेदार बॉलीवुड ही है। सरकार में बैठे लोगों को सेंसर बोर्ड पर नकेल कसनी चाहिए।

*-**भीखाराम**, भीमथल,बाड़मेर*

सराहनीय पहल

पाथेय कण द्वारा 16 नवम्बर के संस्करण को नारी शक्ति को समर्पित करने की पहल सराहनीय है। नारी शक्ति पर लिखे सभी लेखों को पढ़ने के बाद निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दू दर्शन में नारी को दैहिक के बजाय बौद्धिक स्तर पर आंकने का प्रयास किया जाता रहा है। विद्वान याज्ञवल्क्य के साथ विदुषी गार्गी का शास्त्रार्थ हो या दो पुरुष विद्वानों के शास्त्रार्थ का निर्णय करने वाली महिला न्यायाधीश उभय भारती, समय-समय पर भारतीय नारी ने अपनी विद्वता का लोहा मनवाया है। हमें गर्व होना चाहिए कि हिन्दू दर्शन ने कभी नारी को भोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत नहीं किया। वर्तमान में हमें नारी को भोग्य वस्तु बनाने के प्रयासों को रोकते हुए उसे पुन: वैदिक काल के उच्चतम बौद्धिक शिखर तक ले जाना होगा। *-**अशोक सिंह राजपुरोहित**, बीकानेर*

सुबह-सुबह कुछ अच्छा पढ़ा जाए

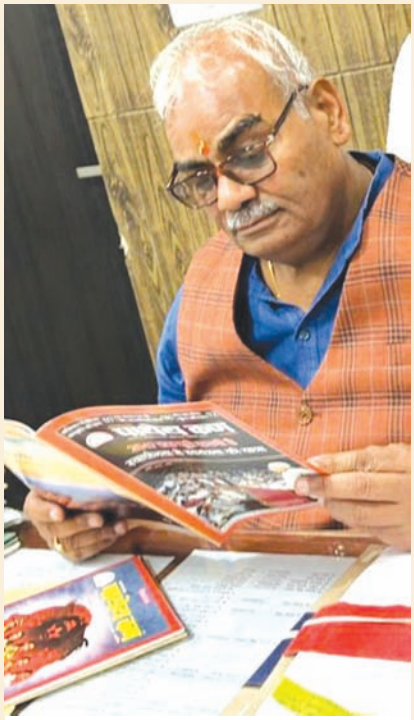

राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री मदन दिलावर पाथेय कण पढ़ते हुए

जुड़ें पाथेय कण के वाट्सअप चैनल से

पाथेय कण ने समय के साथ चलते हुए तेजी से बदल रही खबरों की दुनिया से जुड़ने के लिए अपना वाट्सअप चैनल प्रारम्भ किया है। चैनल के माध्यम से आप तक तात्कालिक विषयों और संदर्भों की सटीक जानकारी तथा वीडियो साझा किए जा रहे हैं। बहुत ही कम समय में 5 हजार लोग इस चैनल से जुड़ चुके हैं। पाठक गण दिए गए स्कैन कोड (क्यूआर) को स्कैन कर आसानी से इस चैनल से जुड़ सकते हैं।

पाथेय कण

फाल्गुन कृष्ण 4 से फाल्गुन शुक्ल 1 तक विक्रम संवत 2081, युगाब्द 5126
16 फरवरी, 2025
वर्ष : 40 अंक : 20

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

आगामी सत्र से
समर्पण निधि
सामान्य 200/-
विशेष 2000/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसेज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। (अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं)

पाथेय कण समाज जागरण की पत्रिका है। इसे बिना किसी लाभ के प्रकाशित किया जाता है।

घुसपैठ समस्या का ट्रम्प निदान

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रम्प ने शपथ ग्रहण से पूर्व और बाद में जिस तरह के बयान दिए हैं और जिस तरह के कदम उठाए हैं, यदि उनका यह रवैया कायम रहता है, तो इस बात की पूरी संभावना है कि, कुछ समय बाद दुनिया वैसी नहीं रहेगी जैसी आज है।

ट्रम्प की सबसे बड़ी गाज अमेरिका में रह रहे घुसपैठियों (अवैध प्रवासियों) पर गिरी है। अमेरिका में जहां भी इनके छिपे होने की आशंका है, एजेंसियां वहां छापे मार रही हैं। बड़ी संख्या में घुसपैठिए पकड़े जा रहे हैं। यहां तक कि स्कूल और चर्च भी उनके लिए सुरक्षित नहीं रहे- एजेंसियां वहां भी पहुंच रही हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प ने इस संबंध में अपने आदेश में कहा है- ''संयुक्त राज्य अमेरिका में अवैध रूप से रहने वाले विदेशी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन गए हैं। वे निर्दोष अमेरिकियों के विरुद्ध घृणित और जघन्य कृत्य करते हैं।''

व्हाइट हाउस (अमेरिकी राष्ट्रपति के निवास और कार्यालय) की प्रेस सचिव लेविट ने बताया कि ट्रम्प द्वारा घुसपैठियों के निष्कासन आदेश के दूसरे ही दिन 538 अवैध प्रवासियों को गिरफ्तार किया गया। इनमें एक संदिग्ध आतंकवादी, ट्रेन डे अरागुआ गिरोह के चार सदस्य और नाबालिगों के विरुद्ध यौन अपराधों के दोषी कई लोग शामिल हैं।

अमेरिका में घुसपैठियों को न केवल गिरफ्तार किया जा रहा, उन्हें सैन्य विमानों में बैठाकर उनके देश भेजा जा रहा है। कहा जा सकता है कि एक प्रकार से अवैध प्रवासियों के निर्वासन (देश से बाहर भेजने) का विश्व का सबसे बड़ा अभियान प्रारंभ हो चुका है।

एक अनुमान के अनुसार अमेरिका में विभिन्न देशों के एक करोड़ 40 लाख अवैध अप्रवासी (घुसपैठिए) रह रहे हैं।

राष्ट्रपति ट्रम्प ने घुसपैठियों के लिए कहा है, ''ये हत्यारे हैं। ये वे लोग हैं, जो सबसे बुरे हैं, इतना बुरा आपने शायद ही किसी को देखा होगा। हम इन खूंखार अपराधियों को देश से बाहर निकाल रहे हैं।'' व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव लेविट ने कहा है कि राष्ट्रपति ट्रम्प दुनिया को स्पष्ट और सख्त संदेश दे रहे हैं कि अगर आप अवैध तरीके से अमेरिका में प्रवेश करते हैं तो आपको गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

भारत भी वर्षों से घुसपैठ की समस्या से जूझ रहा है। भारत में भी घुसपैठिए विभिन्न अपराधों में लिप्त पाये जाते रहे हैं। भारत विश्व को ऐसा संदेश कब देगा?

प्रधानमंत्री मोदी पूर्व में कई चुनावी सभाओं में कह चुके हैं कि घुसपैठिए दीमक की तरह होते हैं। वे जो खाना खा रहे हैं वह हमारे गरीबों को जाना चाहिए। घुसपैठिए हमारी नौकरियां भी ले रहे हैं। 2019 की एक चुनावी रैली में भारत के गृहमंत्री अमित शाह (तब भाजपा के अध्यक्ष थे) ने दिल्ली में कहा था 'अगर हम 2019 का लोकसभा चुनाव जीतते हैं, तो घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें देश से बाहर निकाला जाएगा।'

कभी-कभी सरकारें, शायद दिखाने भर के लिए, कुछ बांग्लादेशीय घुसपैठियों को गिरफ्तार कर डिटेंशन केन्द्रों में रखती हैं। उन्हें भी निर्वासित नहीं किया जाता। पश्चिम बंगाल के डिटेंशन केन्द्रों में 850 बांग्लादेशीय घुसपैठियों को रखा गया था। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 3 फरवरी, 2025 को इन घुसपैठियों को बांग्लादेश नहीं भेजने पर आश्चर्य जताया है।

हाल ही में (21 जनवरी, 2025 को) भारत के उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने अपने एक संबोधन में घुसपैठियों के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर पड़ते गंभीर प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहा था-''हर बीतता दिन (घुसपैठियों को बाहर निकालने के) संकल्प को जटिल बना देगा। हमें इस मुद्दे का समाधान करने की आवश्यकता है।''

देश इंतजार कर रहा है कि अमेरिका की तरह भारत भी कब घुसपैठियों को गिरफ्तार कर बाहर भेजेगा। सरकारें और सत्तारूढ़ राजनीतिक दल इस ओर गंभीरता से कार्य करेंगे तभी देश की बाह्य और आंतरिक सुरक्षा बची रहेगी।

-रामस्वरूप

क्रांतिपथ का नायक

जब अंग्रेजी सरकार ने डरकर जामुन पेड़ को रातों रात कटवाकर फिंकवा दिया

पराधीन भारत में युवाओं के एक वर्ग का विचार था कि देश को स्वतंत्र कराने के लिए विदेशी शासकों यानी अंग्रेजों को भयभीत करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें यह देश छोड़कर जाने में ही अपनी भलाई दिखाई दे। ऐसे युवाओं ने सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाया। सम्पूर्ण भारत में बड़ी संख्या में इस विचार के युवा क्रांति कार्य में सक्रिय थे। विशेष रूप से महाराष्ट्र, बंगाल, पंजाब, आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में ऐसे कई क्रांतिकारी संगठन थे। क्रांतिकारियों के पीछे पुलिस पड़ी रहती थी। पकड़े जाने पर पुलिस की मार, जेल में अत्याचार और कई बार फांसी की सजा मिलती। परंतु मां भारती के लिए सैकड़ों ऐसे युवा बलिदान पथ पर बढ़ चले थे। चन्द्रशेखर आजाद इन्हीं में से एक थे।

बनारस की संस्कृत विद्यापीठ में पढ़ने वाले चन्द्रशेखर 14 वर्ष की उम्र के गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने लगे। विदेशी माल न बेचा जाए, इसके

लिए धरना देते पकड़े जाने पर मजिस्ट्रेट की अदालत में उन्हें प्रस्तुत किया गया। मजिस्ट्रेट ने पूछा- तुम्हारा नाम क्या है? चन्द्रशेखर ने कहा- मेरा नाम आजाद है। तुम्हारे पिता का नाम क्या है? तो जबाव मिला-मेरे पिताजी का नाम स्वतंत्रता है। तुम्हारा घर कहां है? -मेरा घर जेलखाना है। इस पर मजिस्ट्रेट चिढ़ गए और उन्होंने 14 वर्ष के चन्द्रशेखर को 15 बेंत लगाने की सजा सुना दी।

जल्लाद ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर चन्द्रशेखर की नंगी पीठ पर बेंत से प्रहार किए। प्रत्येक प्रहार के साथ कुछ खाल उधड़ जाती थी। चन्द्रशेखर हर बेंत के साथ ''भारत माता की जय'' या ''महात्मा गांधी की जय'' बोलते। इस अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर बनारस के ज्ञानवापी मोहल्ले में उनका नागरिक अभिनन्दन किया गया। तब से उनका नाम पड़ गया- चन्द्रशेखर आजाद।

असहयोग आंदोलन के दौरान 1922 में चौरी-चौरा स्थान पर आंदोलन करती जनता पर अंग्रेज पुलिस ने गोली चला दी थी। इससे 3 लोगों की मृत्यु होने पर आंदोलनकारी भड़क गए और उन्होंने पुलिस चौकी में आग लगा दी। परिणामत: 22 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।

इस घटना से नाराज गांधी जी ने असहयोग आंदोलन समाप्त करने की घोषणा कर दी। क्रांतिकारियों सहित बहुत से लोगों को गांधी जी का यह

वह जामुन का पेड़

जिस जामुन के पेड़ के नीचे आजाद का बलिदान हुआ था, वहां हर दिन लोगों की भीड़ लगने लगी थी। लोग फूलमालाएं चढ़ाने और दीपक जलाने लगे। आजाद की लोकप्रियता से घबराकर अंग्रेज सरकार ने रातों रात उस पेड़ को जड़ से कटवा कर दूर फिंकवा दिया। बाद में लोगों ने इसी जगह पर एक नये जामुन के पेड़ का रोपण कर दिया था।

अंग्रेज सरकार ने चन्द्रशेखर आजाद के शव का तुरत-फुरत ही पोस्टमार्टम कराकर रसूलाबाद घाट पर दाह-संस्कार कर दिया था। आजाद की अस्थियां एकत्रित कर उनके रिश्तेदार शिवविनायक मिश्र शहर में लाए और एक जुलूस में पार्क पहुँचाया गया। अस्थियों पर शहर में कई

जगह फूल बरसाये गए। वहां पुरुषोत्तम दास टंडन, शचीन्द्र सान्याल की पत्नी सहित कइयों के भाषण हुए। उस दिन पूरे शहर में हड़ताल रही।

चन्द्रशेखर आजाद की जन्मभूमि भांवरा (अलीराजपुर म.प्र.) में आजाद की प्रतिमा के साथ शिवराज सिंह चौहान व नरेन्द्र मोदी ।

निर्णय उचित नहीं लगा। इससे पूर्व 1919 में हुए जलियांवालाबाग नरसंहार से युवा पहले से ही उद्वेलित थे।

किशोर चन्द्रशेखर आजाद का मन भी देश को स्वतंत्र कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रांति की ओर मुड़ गया। मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आने पर वे उनके दल 'हिंदुस्तान प्रजातंत्र संघ' (Hindustan Republic Association) के सदस्य बन गए।

क्रांतिकारियों को पिस्तौल, बम आदि खरीदने व क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता होती थी। 1925 की 9 अगस्त को क्रांतिकारियों ने लखनऊ के निकट काकोरी नामक स्थान पर सहारनपुर- लखनऊ पैसेंजर गाड़ी को रोककर उसमें रखा अंग्रेजी सरकार का खजाना लूट लिया। चन्द्रशेखर आजाद भी इस अभियान में शामिल थे। पुलिस द्वारा इस अभियान में शामिल सभी क्रांतिकारी गिरफ्तार कर लिए गए। परंतु चन्द्रशेखर आजाद पुलिस के हाथ नहीं लगे। वे झांसी के पुलिस थाने में जाकर पुलिसवालों से गपशप करके काकोरी मामले की जानकारी प्राप्त करते रहे परंतु पुलिसवालों को कभी संदेह नहीं होने दिया कि यह व्यक्ति महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद है जो स्वयं भी 'काकोरी कांड' में शामिल थे।

देश के साथ गद्दारी

भारत के किसी बड़े नेता ने देश के साथ गद्दारी कर पुलिस को चन्द्रशेखर आजाद की जानकारी (लोकेशन-उपस्थिति) उपलब्ध करा दी। बताते हैं कि पुलिस अधीक्षक नाटबाबर ने अपने बयान में कहा था, ''वह अपने घर पर खाना खा रहे थे, उसी समय भारत के एक बड़े नेता का सन्देश आया। इसमें बताया गया कि आप जिसकी तलाश कर रहे हैं, वह इस समय अल्फ्रेड पार्क में मौजूद है। ''

आजाद की पिस्तौल

चन्द्रशेखर आजाद की पिस्तौल

चन्द्रशेखर आजाद का महत्व भले ही उस समय के कांग्रेसी नेताओं ने नहीं समझा, अंग्रेज सरकार और अंग्रेज पुलिस अधिकारी नाटबाबर को समझ थी कि उसने किस महान भारतीय योद्धा से संघर्ष किया था। नाटबाबर के रिटायर होने पर सरकार ने आजाद की पिस्तौल उन्हें उपहार में दे दी। उसे वह अपने साथ इंग्लैड ले गया। स्वाधीनता के बाद पिस्तौल को लौटाने की मांग से वह हमेशा इंकार करता रहा। भारत सरकार के लिखित अनुरोध पर ही उसने आजाद की पिस्तौल लौटाई जिसे 27 फरवरी, 1973 को क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ बख्शी की अध्यक्षता में एक समारोहपूर्वक लखनऊ के संग्रहालय में रखा गया।

पुलिस ने काकोरी कांड में शामिल प्रमुख क्रांतिकारी पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां और ठाकुर रोशन सिंह को 19 दिसम्बर, 1927 को फांसी पर लटका कर मार दिया। दो दिन पूर्व एक और क्रांतिकारी राजेन्द्र लाहिड़ी को अंग्रेज सरकार फांसी दे चुकी थी। 16 अन्य क्रांतिकारियों को कड़ी जेल की सजा दी गई। भगत सिंह और आजाद ने अपने क्रांतिकारी साथियों को जेल से छुड़ाने की योजना बनाई थी, परंतु वह पूरी न हो सकी।

आजाद ने 8 सितम्बर, 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान पर एक गुप्त सभा कर फिर से क्रांतिकारियों को संगठित करना आरंभ किया। एक नया संगठन 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक आर्मी' बनाया गया। चन्द्रशेखर आजाद कमांडर- इन- चीफ (सेना प्रमुख) और भगत सिंह को प्रचार प्रमुख का जिम्मा दिया गया। तय हुआ ''हमारी लड़ाई अंतिम निर्णय होने तक जारी रहेगी और वह निर्णय है जीत या मौत''

ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में भेजे ''साइमन कमीशन'' का कांग्रेस सहित सभी लोग विरोध कर रहे थे। लाहौर में विरोध कर रहे प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व पंजाब के लोकप्रिय नेता लाला लाजपत राय कर रहे थे। उन पर अंग्रेज पुलिस ने बेरहमी से लाठियां बरसाई। इसके कारण कुछ दिन पश्चात् लालाजी की मृत्यु हो गई।

चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह व उनके क्रांति दल के अन्य सदस्यों ने लालाजी की मौत का बदला लेने का निश्चय किया। लाहौर के अंग्रेज पुलिस अधीक्षक जेम्स ए. स्कॉट को मारने का निर्णय लिया गया। स्कॉट के बजाय सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन पी.सांडर्स उनके हत्थे चढ़ गया। वह भी लालाजी की मृत्यु का उतना ही दोषी थी।

गुदड़ी का लाल

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म वर्तमान मध्य प्रदेश के भांवरा गांव में एक अत्यन्त गरीब परिवार में हुआ था लेकिन देश की स्वतंत्रता की लगन बचपन से ही थी। देश को स्वतंत्र कराने के संघर्ष में वे अपना परिवार, माता-पिता सब को भूलकर एकनिष्ठ भाव से लगे हुए थे। देश की स्वाधीनता के बाद जिनके हाथों में सत्ता आई उन्होंने क्रांतिकारियों और उनके परिवारों की पूरी तरह अनदेखी की। आजाद की मां को स्वाधीन भारत में भी जंगलों से लकड़ियां चुनकर लाने और बाजार में बेचने पर होने वाली नाममात्र की आय पर जैसे-तैसे अपना गुजारा करना पड़ा।

17 दिसम्बर, 1928 को सांडर्स जैसे ही अपने कार्यालय से बाहर निकला, भगतसिंह और राजगुरु ने गोलियां चलाकर उसे ठंडा कर दिया।

चन्द्रशेखर आजाद डीएवी हॉस्टल से इस घटना पर नजर रखे हुए थे। उन्होंने देखा कि एक पुलिस हवलदार (चानन सिंह) भगत सिंह के पीछे दौड़ रहा था। क्रांतिकारी शिव वर्मा ने अपनी पुस्तक में लिखा है, '' ये जिंदगी और मौत की दौड़ थी और दोनों के बीच का अंतर कम होता जा रहा था। भागते हुए चानन सिंह की बाहें भगत सिंह को बस पकड़ने ही वाली थी कि एक गोली उनकी जांघ के पार निकल गई और वह गिर पड़ा। यह गोली चन्द्रशेखर आजाद ने चलाई थी।''

लाहौर में जगह-जगह पर्चे चिपकाये गए कि लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया गया है। संपूर्ण देश में खुशी की लहर दौड़ गई।

आजाद के नेतृत्व में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली की केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट किया। यह बम विस्फोट अंग्रेज सरकार द्वारा बनाये गए काले कानूनों के विरोध में किया गया था। जैसा कि पहले से ही तय था, भगत सिंह और दत्त बम विस्फोट के बाद भागे नहीं। अपने को उन्होंने गिरफ्तार करवा लिया ताकि न्यायालय के माध्यम से अपनी बात जनता तक पहुँचा सकें और जनता में अंग्रेज सरकार के प्रति आक्रोश को हवा दी जा सके। इसके परिणामस्वरूप देश की जनता में क्रांतिकारी बहुत लोकप्रिय हो गए थे।

अंग्रेज सरकार के न्यायालय ने सांडर्स वध के मुकदमे में भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फांसी की सजा सुना दी थी। असेंबली बम मामले में बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास और काले पानी की सजा मिली। भगत सिंह और उनके साथियों की फांसी रूकवाने के लिए आजाद ने क्रांतिकारी दुर्गा भाभी (क्रांतिकारी भगवती चरण बोहरा की पत्नी) को गांधी जी के पास भेजा, जहां से उन्हें कोरा जवाब दे दिया गया। स्वयं आजाद इस संबंध में 20 फरवरी, 1931को जवाहरलाल नेहरू से मिलने गए थे।

27 फरवरी, 1931 को चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अपने साथी सुखदेव राज के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे। किसी ने पुलिस को इस की सूचना दे दी। पुलिस अधीक्षक अंग्रेज नाटबाबर ने पुलिस दल के साथ आजाद को घेर लिया और आजाद पर गोली चला दी। गोली आजाद की जांघ में लगी। आजाद ने घिसटकर जामुन के पेड़ की ओट लेते हुए अपने माउजर पिस्तौल से नाटबाबर पर गोली चलाई। निशाना सही लगा और गोली ने नाटबाबर की कलाई तोड़ दी तथा पिस्तौल नाटबाबर के हाथ से गिर गई। आजाद की एक और गोली से नाटबाबर का साथ दे रहे डिप्टी सुपरिटेंडेंट विश्वेश्वर सिंह का जबड़ा टूट चुका था।

उन्होंने अपने साथी सुखदेव राज को पहले ही भगा दिया था। बुहत देर तक आजाद अकेले ही जमकर पुलिस का मुकाबला करते रहे। आजाद के माउजर में एक अंतिम गोली बची थी। वे पुलिस की गिरफ्त में नहीं आना चाहते थे। उन्होंने अपनी कनपटी पर माउजर पिस्तौल की नली लगाकर आखिरी गोली चला दी।

पूरा जीवन देश की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने वाला, युवाओं को संगठित कर सशस्त्र क्रांति से अंग्रेज सरकार पर प्रहार करने वाला, क्रांति पथ का नायक, भारत माता का सपूत हमेशा हमेशा के लिए चिरनिद्रा में सो गया। एक महान क्रांतिकारी योद्धा ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना बलिदान दे दिया था। ■ *(रामस्वरूप अग्रवाल)*

पंच प्रण

■ **डॉ. दीपक कुमार शर्मा,** जयपुर

पंच प्रण लेते चलें हम,
राष्ट्र के उत्थान पथ पर।
श्रेष्ठ हो परिवार अपना
और समरस हो समाज।
राष्ट्र गौरव हो रगों में
हों स्वदेशी मन के भाव॥

नागरिक कर्त्तव्य समझें
धैर्य अंगीकार कर।
प्रकृति की रक्षा करें हम
संयमित व्यवहार कर॥

फिर कभी बंट पायें न हम
जाति, भाषा, वर्ण में।
और खंडित हो नहीं फिर
मातृभूमि पंथ में॥

दीप जगमग हों जगत में
राष्ट्र के उत्कर्ष के।
ये तभी संभव बने जब
हम चढ़ें पुरुषार्थ रथ पर।
पंच प्रण लेते चले हम,
राष्ट्र के उत्थान पथ पर॥

-प्रदेश संगठन मंत्री, अ.भा.रा.शैक्षिक महासंघ, राजस्थान (उच्च शिक्षा)

प्रयागराज महाकुम्भ का राजस्थान से अंतर्संबंध

■ गुलाब बत्रा

रेल यात्रा के दौरान किसी पुल के नीचे बहती नदी में सिक्के फैंकने की परम्परा किसी न किसी रूप में यथावत है। तब ये सिक्के तांबे के होते थे जिनमें 95 प्रतिशत तांबा तथा 5 प्रतिशत जिंक होता था। नदी जल को पेयजल के रूप में शुद्ध करने में तांबे का वैज्ञानिक महत्व है। इन्हीं पवित्र नदियों के तट पर गौरवशाली सभ्यता विकसित हुई। नदियों को माता मानकर उनका अर्चन हुआ जिसके अनेक मंत्र वेदों में उल्लेखित हैं।

भागवत पुराण के अनुसार अमृत मंथन में प्रकटे 14 रत्नों में अंतिम रत्न अमृत के कलश को पाने की होड़ में चर्चित देव-दानव संघर्ष के दौरान चार स्थलों पर प्रवाहित नदियों की जलधारा में एकाकार हुई अमृत बूंदों के प्रतीक स्वरूप कुम्भ पर्वों का सूत्रपात हुआ। प्रयागराज में संगम तट, हरिद्वार में गंगा, उज्जैन में क्षिप्रा एवं नासिक में गोदावरी नदी तट पर सूर्य एवं बृहस्पति के चाल गमन की गणनानुसार कुम्भ के आयोजन की अवधि एवं तिथियों का निर्धारण हुआ। आद्य शंकराचार्यजी ने साधु, संतों-संन्यासियों को अखाड़ा रूप में संगठित कर कुम्भ पर्व को नई दिशा दी। इस सारस्वत अनुष्ठान का प्रमुख ध्येय आध्यात्मिक एवं धार्मिक विचार-विमर्श और चिंतन-मनन से जन आस्था को सुदृढ़ करना था। सदियों से जनमानस स्वप्रेरणा से कुम्भ स्नान की परम्परा का निर्वाह कर रहा है।

कालखंड में समूचा चक्र उलटा पलटा हो गया। सदानीरा पवित्र नदियां औद्योगिक विकास व आधुनिकता की होड़ में प्रदूषण का शिकार होती गई। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के कार्यकाल में गंगा नदी को स्वच्छ एवं निर्मल बनाने की मिशन मोड पर योजना

बनी। करोड़ों रुपया खर्च होने के बावजूद हालात बद से बदतर हुए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में गंगा नदी को निर्मल एवं स्वच्छ स्वरूप देने का संकल्प घोषित कर नया मंत्रालय बनाया। इलाहाबाद को प्रयागराज की पहचान के साथ 144 वर्षों के अंतराल पर भव्य दिव्य महाकुम्भ को विराट स्वरूप देने की अनूठी पहल अभिनंदनीय है।

सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी का प्रयागराज तथा राजस्थान के पुष्कर तीर्थ से सीधा जुड़ाव रहा है। कमल पुष्प की पंखुड़ियों से पुष्कर में निर्मित तीन सरोवर तथा ब्रह्मा जी द्वारा यज्ञ-मुहूर्त काल में सावित्री की अनुपस्थिति में गायत्री माता को वेदी पर बिठाये जाने से कुपित सावित्री के श्राप की कथा सर्वविदित है। इसलिए पुष्कर में ब्रह्मा जी के प्राचीन मंदिर तथा उनकी पूजा अर्चना की परम्परा बनी हुई है। पुष्कर में पहाड़ी पर सावित्री माता मंदिर में दर्शन के लिए रोप वे की व्यवस्था की गई है।

सृष्टि की रचना प्रसंग में प्रयागराज का भी अर्न्तसंबंध है। सृष्टि निर्माण पूर्ण होने पर ब्रह्मा जी ने प्रथम यज्ञ किया जिसके लिए विशाल भू-क्षेत्र में 12 यज्ञ वेदियां बनाई गई जो प्रयाराज की सीमाओं की पहचान बन गई। कालांतर में इन यज्ञ वेदियों को द्वादश माधव स्वरूप में मंदिरों का दर्जा मिला जिनकी परिक्रमा माघ एवं कुम्भ मेले की प्रतीक बन गई। संगम तट पर स्नान सहित 21 नियमों की अनुपालना में कल्पवास का प्रचलन गतिशील हुआ। नतीजतन इस महाकुम्भ में 8 से 10 लाख श्रद्धालुओं के कल्पवास का अनुमान है जिनमें विदेशी श्रद्धालु सम्मिलित हैं।

प्रयागराज के संगम तट पर अदृश्य सरस्वती नदी का प्रवाह राजस्थान से होकर बना हुआ था। हरियाणा से राजस्थान के गंगानगर-बीकानेर क्षेत्र से प्रवाहित सरस्वती नदी जैसलमेर-बाड़मेर से गुजरात के कच्छ रण से होकर अरब सागर में विलीन हो जाती थी। सैकड़ों हजारों वर्ष पहले समुद्री तूफान के चक्र में वैदिक सरस्वती नदी का प्रवाह क्रमशः क्षीण होते-होते लुप्त हो गया। प्रचीनकाल में हड़प्पा संस्कृति के नष्ट होने से भी सरस्वती नदी के अस्तित्व पर संकट आया।

लुप्त सरस्वती नदी के जल के प्रवाह की खोज के लिए भारत की स्वाधीनता से पूर्व और पश्चात् बहुविध प्रयास किए गए। सुदूर संवेदन तकनीक और भूतल पर किए गए परीक्षणों के आधार पर लुप्त सरस्वती नदी के जल प्रवाह मार्ग की खोज में सफलता मिली है। इस अंचल में खोदे गये नलकूपों से गइराई में भूजल के भण्डार मिले हैं। यह मीठा जल गुणवत्ता की दृष्टि से उत्तम माना गया है। ऐसा माना जाता है कि गहन शोध तथा परीक्षण नलकूपों की संख्या में अपेक्षित वृद्धि से पेयजल समस्या के समाधान में भी सहायता मिलेगी।

प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित महाकुम्भ से राजस्थान और तीर्थराज पुष्कर एवं राजस्थान के अन्तर्संबंधों को सांस्कृतिक आध्यात्मिक स्वरूप देने में चिंतन-मनन अपेक्षित है। ■

-लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

(19 फरवरी जयंती विशेष)

हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी

''हमारे राष्ट्र का सच्चा पुनरुद्धार शुरू होना चाहिए व्यक्ति निर्माण से। तदर्थ व्यक्ति में ऐसी शक्ति उत्पन्न करना आवश्यक है कि वह मानवीय दुर्बलता पर विजय प्राप्त कर सके और अपने अंदर प्रेम, आत्मसंयम, त्याग, सेवा और चारित्र्य आदि परंपरागत गुणों को आत्मसात करते हुए हिंदू पुरुषार्थ के देदीप्यमान प्रतीक के रूप में खड़ा हो। हमें अपने वैभवशाली राष्ट्रत्व का यह महत्वपूर्ण और वास्तविक सारतत्व अपनी दृष्टि के समक्ष सदैव रखना होगा, ताकि हम पुन: विश्वगुरु के अपने मूल पद पर प्रतिष्ठित हो सकें।''

''हम इस दृष्टि से आत्मनिरीक्षण करें और हिंदुत्व की विशेषताओं को क्रमश: आत्मसात करें, जिससे हम दुनिया के सामने भावात्मक और गतिशील हिंदू के रूप में खड़े हो सकें। हम अपने दर्शन, अपने धर्म और उन समस्त श्रेष्ठ सद्गुणों के अनुरूप अपने आपको ढालें, जिनके द्वारा असंख्य पीढ़ियों से हमारा जीवन ढाला जाता रहा है।''

''यद्यपि हिंदू समाज को संगठित करने का विचार बड़ा सरल प्रतीत होता है तथापि उसका सही अर्थ है कि हम सर्वप्रथम अपने दैनंदिन जीवन में अपनी हिंदू विरासत के प्रति तीव्र रूप से सजग हों और अपने जीवन के हर पहलू को उन श्रेष्ठ परंपरागत आदर्शों के अनुरूप ढालें। अपनी करनी, कथनी, अपनी वेशभूषा, अपना व्यवहार और जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी भावात्मक निष्ठा की प्रभावी अभिव्यक्ति होनी चाहिए। यही प्राथमिक जिम्मेदारी आज हमारे कंधों पर है।'' – श्री गुरुजी

(निष्काम कर्मयोगी पुस्तक से साभार)

समान नागरिक संहिता की ओर बढ़ते कदम

उत्तराखंड में लागू हुआ कानून

देवभूमि उत्तराखंड समान नागरिक संहिता लागू करने वाला भारत का पहला राज्य बन गया है। यह कानून 27 जनवरी, 2025 को लागू हो गया है। इसमें महिला सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई है। यह अनुसूचित जातियों / जनजातियों को छोड़कर संपूर्ण उत्तराखंड राज्य तथा राज्य से बाहर रहने वाले उत्तराखंड के समस्त निवासियों पर लागू होगा।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि कानून में किसी भी धर्म की मूल मान्यताओं और प्रथाओं को समाप्त नहीं किया गया है। इस कानून द्वारा सभी लोगों के लिए विवाह, तलाक और उत्तराधिकार के नियमों को समान किया गया है। सभी धर्म के लोग अपने-अपने रीति रिवाज के अनुसार विवाह कर सकते हैं। समान नागरिक संहिता लागू हो जाने के बाद सभी धर्म, जाति व पंथ के लोगों को समान अधिकार मिलने प्रारम्भ हो जायेंगे।

इस कानून की धाराओं के उल्लंघन पर कड़ी सजा का प्रावधान किया गया है। संपत्ति में सभी धर्मों की महिलाओं को समान अधिकार दिया गया है। सभी बच्चे, पुत्र अथवा पुत्री, संपत्ति में बराबर के अधिकारी बनाये गये हैं। यदि किसी व्यक्ति की वसीयत नहीं है और उसकी कोई संतान अथवा पत्नी नहीं है तो उत्तराधिकार के लिए रिश्तेदारों को प्राथमिकता दी गई है।

लिव इन रिलेशनशिप का पंजीकरण अनिवार्य कर दिया गया है। लिव इन में पैदा हुए बच्चे को भी वैध संतान माना गया है। अब नये कानून के अंतर्गत लिव इन रिलेशनशिप को कोई भी पक्ष समाप्त भी कर सकता है। यदि किसी भी पंथ का कोई पुरुष अपनी पत्नी को छोड़ देता है तो वह उससे भरण पोषण की मांग कर सकती है। किसी एक पक्ष के नाबालिग अथवा

विवाहित होने पर लिव इन की अनुमति नहीं दी जाएगी।

उत्तराखंड में लागू समान नागरिक संहिता विधेयक में पति की क्रूरता और विवाहेत्तर संबंधों पर पत्नी को भी तलाक का अधिकार दिया गया है। इस अधिनियम के अलावा किसी अन्य प्रथा/परंपरा के अंतर्गत तलाक मान्य नहीं होगा।

यह कानून उत्तराखंड के सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर देगा, विशेषकर उन महिलाओं के सम्मान व अधिकारों की रक्षा होगी, जिन परंपराओं में पुरुष वर्चस्व का चलन है। देवभूमि उत्तराखंड की मुस्लिम महिलाओं को अब तीन तलाक, बहुविवाह और हलाला जैसी बर्बर प्रथाओं से मुक्ति मिलेगी। लिव इन रिलेशनशिप को लेकर जो व्यवस्था समान नागरिक संहिता में की गई है, उससे लव जिहाद में फंसकर अपने प्राणों तक की आहुति देने वाली बेटियों को भी एक बड़ा सुरक्षा कवच मिल गया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कई अवसरों पर माना और कहा है कि केंद्र सरकार को एक समान नागरिक संहिता लानी ही चाहिए, जिसे उत्तराखंड की सरकार ने पूर्ण कर दिखाया है। उत्तराखंड विधानसभा से समान नागरिक संहिता विधेयक पारित हो जाने के बाद अब उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि अनेक प्रांतों ने भी इसे लागू करने की तैयारी प्रारम्भ कर दी है। ■

लौट रही है सनातन परम्परा

शंख ध्वनि और वैदिक मंत्रोच्चार से हुआ उद्घाटन

स्वदेशी खेल भी राष्ट्रीय खेलों में शामिल

देवभूमि उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून में बीती 28 जनवरी को 38वें राष्ट्रीय खेलों का शुभारम्भ हुआ। पहली बार ऐसा हो रहा है जब शंख बजाकर एवं वैदिक मंत्रोच्चार से खेल कुंभ का शुभारम्भ किया गया।

मेडल व ट्रॉफियां बनाई 'ई-वेस्ट' से : इस बार के खेलों की थीम 'ग्रीन गेम्स' है जो पूर्ण रूप से पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखकर रखी गई है। प्रतिस्पर्धा के दौरान मिलने वाले सभी मेडल और ट्रॉफियां भी ई-वेस्ट से आकर्षक रूप में बनाई गई है। इसी के साथ मेडल जीतने वाले खिलाड़ियों के नाम से एक पौधा भी इस बार लगाया जायेगा जो एक अच्छी और प्रेरणादायक पहल है। आयोजन के दौरान सौर ऊर्जा का अधिकतम उपयोग और प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करने पर भी जोर रखा गया है।

जोड़े गए स्वदेशी खेल : मेजबानी कर रहे उत्तराखण्ड में पहली बार ऐसा हो रहा है जब राष्ट्रीय खेलों में देसी पारम्परिक खेल योगासन, कबड्डी, खो-खो व मल्लखम्ब को भी शामिल किया गया है।

उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि यह भारत की अविश्वसनीय खेल प्रतिभा का उत्सव है। जब कोई देश खेल में आगे बढ़ता है तो देश की साख बढ़ती है और यह देश की प्रोफाइल को भी बढ़ाता है। इस खेल कुम्भ में राजस्थान से 421 खिलाड़ियों का दल भाग ले रहा है। वर्ष 2023 में गोवा में आयोजित नेशनल गेम्स के दौरान राजस्थान के प्रतिभावान खिलाड़ियों ने कुल 66 पदक जीते थे।

जब मस्जिद व चर्च पर नियंत्रण नहीं तो मंदिरों पर क्यों?

सरकारी नियंत्रण से मंदिर मुक्ति हेतु विहिप का महाअभियान

अब भी मंदिरों की आमदनी का एक हिस्सा अनिवार्य रूप से सरकारों को देना पड़ता है। सरकारी प्रबंधन और नियंत्रण से जब मस्जिद व चर्च बाहर हैं तो मंदिरों पर सरकारों का कब्जा आखिर क्यों? देश के हर मंदिर की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति हेतु यह शंखनाद किया है विश्व हिंदू परिषद ने। इस देशव्यापी जन जागरण अभियान का शुभारंभ बीती 5 जनवरी को आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में आयोजित विराट हिंदू समागम 'हैदंव शंखारावम्' (हिंदू धर्म का युद्ध घोष) कार्यक्रम से हुआ जहां बड़ी संख्या में संत समाज व समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

विहिप के संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे के अनुसार इस हेतु विश्व हिंदू परिषद द्वारा जो रोड मैप तैयार किया है उसके प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं-

- मंदिरों की संस्था में नियुक्त सभी गैर हिंदुओं को निकाला जाए।
- मंदिरों के न्यासियों एवं प्रबंधन में किसी राजनेता या राजनीतिक दलों से जुड़े व्यक्तियों को ना रखा जाए।
- मंदिरों के अंदर और बाहर के हिस्से में सिर्फ हिंदुओं की ही दुकानें हों।
- गैर हिंदुओं द्वारा मंदिरों की जमीन पर बनाए हुए तथा अन्य सभी अवैध निर्माणों को हटाया जाए।
- मंदिरों की आय को सिर्फ हिंदू धर्म के प्रचार और उससे जुड़े विषयों पर ही खर्च किया जाए। सरकारी कार्यों में कदापि नहीं।

परांडे जी ने बताया कि मंदिरों के प्रबंधन और नियंत्रण कार्य हेतु सुप्रीम कोर्ट के वकीलों, उच्च न्यायालयों के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायधीशों, संतों तथा विहिप के कार्यकर्ताओं को मिलाकर एक 'चिंतन टोली' बनाई गई है जो इस कार्य को देखेगी।

इसके साथ ही राज्य स्तर पर एक 'धार्मिक परिषद्' भी बनाई जायेगी जो जिला स्तर पर मंदिर के न्यासियों का चुनाव करेगी जिसमें सर्व समाज के विविधि वर्गों का सहभाग होगा। इससे पूर्व गत 30 सितम्बर, 2024 को विहिप ने देश के सभी राज्यों के राज्यपालों को ज्ञापन देकर उनकी सरकारों को मंदिरों के प्रबंधन से हट जाने के लिए निवेदन किया था।

संगम, समागम और समन्वय

महाकुम्भ से आया सनातन-बौद्ध एकता का संदेश

विश्व के कई देशों के भंते, लामा व बौद्ध भिक्षुओं तथा सनातन के धर्माचार्यों की उपस्थिति में प्रयागराज महाकुम्भ से सनातन- बौद्ध एकता का संदेश दिया गया है। बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघम् शरणं गच्छामि के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से गत 5 फरवरी को बौद्ध महाकुम्भ यात्रा निकाली गई। यात्रा का समापन जूना अखाड़े के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि के प्रभु प्रेमी शिविर में हुआ। इस अवसर पर तीन प्रमुख प्रस्ताव पारित किए गए। पहला, बांग्लादेश व पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बंद हो दूसरा, तिब्बत की स्वायत्तता को लेकर तथा तीसरा, प्रस्ताव सनातन व बौद्ध एकता को लेकर पारित किया गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य सुरेश भय्याजी जोशी ने कहा कि प्रयागराज महाकुम्भ से संगम, समागम व समन्वय का संदेश पूरी दुनिया में जाना चाहिए। जो भी यहां आता है, वह संगम जाकर स्नान की इच्छा रखता है। यहां गंगा, यमुना व सरस्वती मिल जाती है, तो भेद दिखाई नहीं देता। यहां संगम के पूर्व अलग-अलग धारायें हैं। संगम का संदेश है कि यहां से आगे एक धारा चलेगी। दूसरा है समागम। देश में विविध प्रकार के मत-मतांतर के सभी श्रेष्ठ संत यहां आकर आपस में मिलकर संवाद व चर्चा करते हैं। संत एक साथ आएंगे तो सामान्य लोग भी एक साथ मिलकर चलेंगे। तीसरा है समन्वय। विश्व में चलना है तो सबको साथ लेकर चलना।

भारत को समझने के लिए इस प्रकार के पर्वों को समझना होगा। जो कहते हैं यहां आपस में विवाद है, यहां आकर एक संग, एक समाज के रूप में चलते हैं, यह देखने को मिलेगा।

उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने हमें संविधान दिया। उस संविधान की पहली पंक्ति है, 'हम भारत के लोग'। उन्होंने 'जाति बिरादरी के लोग', ऐसा नहीं कहा। ग्रन्थ, पूजा-पद्धति, सम्प्रदाय कोई भी होगा, संविधान के अनुसार सारा भारत एक है। भारत माता की जय बोलने वाले सब एक ही माता के पुत्र हैं। जो इस मिट्टी के प्रति श्रद्धा व भक्ति रखता है, वह वंदेमातरम् बोलता है।

कार्यक्रम में निर्वासित तिब्बत सरकार की मंत्री गैरी डोलमा ने कहा कि इस पावन धरती पर इतिहास रचा जा रहा है। सनातन व बौद्ध धर्म के बीच जिस तरह की प्रेम भावना होनी चाहिए, उस तरह का बहुत बड़ा कदम पावन धरती पर लिया गया है। महाकुम्भ में हम बौद्ध व सनातनी एक साथ आए हैं और कदम मिलाकर चल रहे हैं।

म्यांमार से आये भदंत नाग वंशा ने कहा कि बौद्ध व सनातन में बहुत ही समानता है। अंतरराष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान के भदंत शीलरतन का कहना था कि हम सब एक थे, एक हैं, व एक रहेंगे। भारत कभी विचलित नहीं होता। भारत फिर से अखण्ड होगा और जगद्गुरु बनेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री इन्द्रेश कुमार ने कहा कि सनातन ही बुद्ध हैं, बुद्ध ही शाश्वत व सत्य है। कुम्भ से सनातन व बौद्ध मत के समन्वय की धारा को आगे ले जाकर काम करेंगे, सत्य का साक्षात्कार करेंगे।

वरिष्ठ पत्रकार श्री गुलाब कोठारी ने कहा कि सबके मन में एक ही ईश्वर है। कुम्भ बहुत बड़ा शब्द है। यह त्रिवेणी से जुड़ा है। यहां से समता, स्वतंत्रता व बंधुत्व का संदेश जाना चाहिए।

संवाद कार्यक्रम को महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी ने भी संबोधित किया। ■

1.51 करोड़ ने किया सूर्य नमस्कार

सूर्य सप्तमी (3 फरवरी, 2025) को राजस्थान में सरकारी व निजी विद्यालयों में विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक आदि ने 1.51 करोड़ सामूहिक सूर्य नमस्कार कर एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया।

महाकुम्भ से महासंदेश

(घुमंतू साधु-संतों का संगम स्नान)

कई बार एक सामान्य से दिखने वाले घटनाक्रम में किसी बहुत बड़े परिवर्तन का बीज छुपा होता है, जो समय आने पर अभिव्यक्त होता है। ऐसे ही क्रांतिकारी परिवर्तन का संदेश अपने अंदर समेटे एक घटनाक्रम इस महाकुम्भ में घटित हुआ। देश भर की घुमंतू जातियों के साधु-संत कुम्भ मेला प्राधिकरण के आमंत्रण पर 25 जनवरी को संगम स्नान के लिए प्रयागराज पहुँचे। इतिहास में यह पहला अवसर था जब सरकार द्वारा गठित कुम्भ मेला प्राधिकरण ने स्वयं घुमंतू समाज के साधु-संतों को कुम्भ मेले में आमंत्रित किया।

दिया गया राजकीय सम्मान

देश भर के अलग-अलग प्रांतों से घुमंतू साधु-संत आये थे। इन सभी साधु-संतों को राजकीय अतिथि के तौर पर पूरे सम्मान के साथ संगम तक पहुँचाया गया। इनकी बस के आगे उत्तर प्रदेश शासन की दो गाड़ियां एस्कॉर्ट करते हुए चल रही थीं तथा बस के पीछे उत्तर प्रदेश पुलिस की एक गाड़ी चल रही थी।

संगम स्नान का यह क्षण उनके जीवन में कितना अविस्मरणीय था यह उनके चेहरों से पढ़ा जा सकता था। दोपहर में आयोजित अखिल भारतीय संत समागम में अ.भा. घुमंतू कार्य प्रमुख श्री दुर्गादास ने घुमंतू कार्य का संक्षिप्त परिचय एवं विषय की प्रस्तावना रखी। मुख्य अतिथि उ.प्र. के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने मंच से उतरकर सामने कुर्सियों पर बैठे साधु-संतों को भगवा शॉल, माला एवं स्वामी अड़गड़ानंद कृत यथार्थ गीता भेंट की। अपने उद्बोधन में श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा, ''संत पूरे विश्व को ममता, समता एवं समरसता का पाठ पढ़ाने वाले मार्गदर्शक हैं। ये शाश्वत मूल्यों के संस्थापक हैं, इसलिए इनकी शिक्षाएं सार्वभौम हैं। राज्य सरकार बेघर यायावर जीवन बिता रहे घुमंतू

समाज के बन्धुओं को स्थाई आवास उपलब्ध कराने के लिए संकल्पबद्ध है।''

महाकुम्भ की विशिष्ट घटना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह श्री सुरेश भय्याजी जोशी ने घुमंतू समाज के साधु संतों को संबोधित करते हुए कहा, ''इस छोटे से परिसर में घट रही यह घटना इस महाकुम्भ की विशिष्टतम घटना है। हम यहाँ से यह संतोष लेकर जा सकते हैं कि हम इस महाकुम्भ के सबसे अद्भुत दृश्य के साक्षी हैं।''

दिया एकता का संदेश

बाहर से साधारण सा दिखने वाला यह कार्यक्रम अपने अंदर कितने असाधारण परिवर्तन की संभावना लिए हुए था, घुमंतू साधु-संतों के उद्बोधन को सुन कर यह सहज ही समझा जा सकता था। मंच से महामंडलेश्वर स्वामी जितेंद्र जी महाराज, कैलाशनाथ जी महाराज, ठाकुरनाथ जी महाराज, पौरागढ़ (महाराष्ट्र) से पधारे बंजारा समाज के पूज्य सन्त बाबू महाराज, इंदौर से पधारे धनगर समाज के संत श्रीश्री 108 महामंडलेश्वर पूज्य दादू जी महाराज, राजसमंद से पधारे बागरिया समाज के संत श्री हासू महाराज, जोधपुर से पधारे बंजारा समाज के पूज्य चेतन गिरी जी महाराज इत्यादि अनेक घुमंतू संतों ने हिंदू समाज की एकता का संदेश दिया। इस संत समागम को विश्व हिंदू परिषद के पूर्व अंतरराष्ट्रीय संगठन मंत्री दिनेश जी, संघ के अ.भा. प्रचारक प्रमुख स्वान्तरंजन जी ने भी संबोधित किया।

हम सब एक हैं

कार्यक्रम के समापन सत्र में अपने मनोगत प्रकट करते हुए घुमंतू साधु संतों ने कहा, ''जीवन में पहली बार हमें इस प्रकार के सम्मान की अनुभूति हुई है। यहाँ हिंदू समाज के बड़े संतों के साथ बैठने का जो सौभाग्य हमें मिला है, वह हमारे मन में इस बात का विश्वास भरता है कि हम सभी एक हैं। इस महाकुम्भ से हम यह प्रण लेकर जा रहे हैं, कि घुमंतू समाज के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर देंगे।'' इस दिव्य कार्यक्रम की रचना योजना के लिए संतों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी हृदय से आभार व्यक्त किया ।

जन्म से कोई छोटा-बड़ा नहीं

समापन सत्र को संबोधित करते हुए निर्वाणी अखाड़े के आचार्य विशोकानंद जी महाराज ने कहा, ''हमारी सनातनी परंपरा में कोई व्यक्ति जन्म के आधार पर छोटा या बड़ा नहीं है, साधना बड़ी है। हम सभी में ईश्वर का अंश है। जिसकी साधना जितनी परिपक्व होगी उतना ईश्वरीय तत्व उसमें प्रकट हो जाएगा।'' महाकुंभ से प्रस्थान के समय व्यवस्थाओं एवं सम्मान से अभिभूत घुमंतू साधु-संतों की आंखों से छलकते आंसू इस बात का विश्वास दे रहे थे कि कोई हिंदू पतित नहीं है, हम सब एक माँ की संतान हैं और एक साथ आगे बढ़ेंगे...। ■

एक संत की झोली (दक्षिणा) से बना बालिका विद्यालय

मरूँ पर माँगू नहीं, अपने तन के काज ।
परमारथ के कारने, मोहिं न आवै लाज।।
सरवर तरवर संत जन, चौथा बरसे मेह।
परमारथ के कारने, चारों धारी देह।।

भारतीय सांस्कृतिक प्रवाह में ऐसे अनेक श्रेष्ठ उदाहरण है जो इन पंक्तियों को चरितार्थ करते हैं। भारत की बहुआयामी संत परंपरा में एक विशेष स्थान नाथ संप्रदाय का भी है। मारवाड़ का जालौर क्षेत्र नाथ संप्रदाय का प्रमुख केंद्र है। यहां संत शांतिनाथ जी महाराज के प्रति इतनी अगाध जन आस्था है कि यहां के अधिकांश प्रतिष्ठानों पर उनका चित्र अवश्य मिलेगा। नाथ जी महाराज का मानना था कि विद्या भारती के स्कूल आधुनिक गुरुकुल हैं। समाज निर्माण के लिए यहाँ की शिक्षा बहुत ज़रूरी है। इनके तीन प्रमुख शिष्यों का अध्ययन भी इसी विद्यालय में हुआ।

वर्ष 1996 में शांतिनाथ जी महाराज ने विश्व हिंदू परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. अशोक जी सिंघल एवं तत्कालीन सार्वजनिक निर्माण विभाग के मंत्री स्व.ललित किशोर चतुर्वेदी की उपस्थिति में जालौर में आदर्श विद्या मंदिर का भूमि पूजन किया था। जालौर में बनने वाला यह विद्या भारती का पहला विद्यालय था।

उनके देहविलय के पश्चात् अखाड़ा के गादीपति बने गंगानाथ जी महाराज ने अपने गुरु महाराज की इच्छा पूरा करने का संकल्प अपने शिष्यों के साथ साझा किया।

साधुओं का धन तो उसकी भिक्षा या दक्षिणा ही होती है। गंगानाथ जी महाराज ने अपनी झोली में आयी दक्षिणा से बालिकाओं के लिए लगभग 5 करोड़ रूपये लगाकर 32 कमरों तथा 1 हज़ार विद्यार्थियों के बैठने के हॉल का निर्माण करवाकर विद्या भारती को भेंट कर भारत की संतों और ऋषियों पर आधारित गौरवशाली ज्ञान परंपरा का गौरव स्थापित किया।

विद्या भारती ने इस विद्यालय का नामकरण 'श्री शांतिनाथ बालिका आदर्श विद्या मंदिर' के नाम से किया। लोकार्पण समारोह के अवसर पर गंगानाथ जी महाराज के शिष्यों ने दो स्कूल बसें, फर्नीचर इत्यादि विद्यालय को भेंट किये। विद्यालय के विभिन्न कक्षों का नामकरण भी गौरवशाली भारतीय मातृशक्ति के नाम पर रखे गए हैं।

शांतिनाथ जी महाराज के जन्म दिवस के अवसर पर माघ कृष्ण पंचमी (19 जनवरी) को इसका लोकार्पण नवनाथ खट दर्शन के प्रमुख 22 संतों की उपस्थिति में महंत गंगानाथ जी महाराज, विधायक व महंत बालकनाथ जी के हाथों हुआ।

इस भव्य कार्यक्रम में संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री सुरेश चंद्र, श्री नंदलाल जोशी, लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री प्रकाश चंद्र, राजस्थान विधान सभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग तथा जालौर-सिरोही के सांसद श्री लुंबाराम चौधरी सहित अनेक प्रवासी व्यवसायी तथा नगर के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

इसी कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर नाकोड़ा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री रमेश शाह ने बालकों के लिए बने हुए भवन को 2 करोड़ रुपए की लागत से सर्व सुविधा युक्त करके देने का संकल्प किया। इसी कार्यक्रम में सांचौर के नेहड़ क्षेत्र में सवा करोड़ रुपए की लागत से एक नया विद्यालय भवन बनाने का स्थानीय निवासी श्री श्रवण सिंह राव ने संकल्प लिया।

-जालौर से नीलम पंवार व संदीप जोशी

विद्यालय के सेवाकर्मी की ओर से प्रबंध समिति ने भरा मायरा

उपखण्ड मुख्यालय, नावां (नागौर) स्थित विद्या भारती के विद्यालय आदर्श विद्या मंदिर में पिछले 21 वर्ष से सेवारत सेवाकर्मी की दो भाणजियों की शादी में विद्यालय प्रबन्ध समिति ने सामूहिक रूप से मायरा भरा। प्रबन्ध समिति के कोषाध्यक्ष श्री तुलसीराम राजस्थानी ने बताया कि मायरा में परम्परागत रूप से आवश्यक सभी कपड़े, गहने व नकद देकर मायरे की रस्म निभाई गई। सेवाकर्मी की पारिवारिक आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर विद्यालय प्रबन्ध समिति ने उक्त मायरा भरकर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

भारत को जानने के लिए आवश्यक हैं संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाएं

-डॉ. कमलचन्द सोगाणी

डॉ. सोगाणी 97 वर्ष की आयु में भी प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन में सक्रिय हैं। इनके सान्निध्य में रहकर कई विदेशी छात्र इन भाषाओं का अध्ययन कर रहे हैं

भारत को जानने के लिए हमें तीन भाषाओं के ज्ञान की आवश्यकता है। संस्कृत, प्राकृत व अपभ्रंश। संस्कृत से सभी लोग परिचित हैं किन्तु प्राकृत-अपभ्रंश के बारे में हम बहुत अधिक नहीं जानते हैं। इसलिए दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा अपभ्रंश साहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से सन् 1988 में 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर में की गई। अकादमी का प्रयास है-अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन को सशक्त करके उसके सही रूप को सामने रखना जिससे साहित्यिक निधि के साथ-साथ आधुनिक आर्य भाषाओं के स्वभाव और उनकी संभावनाएँ भी स्पष्ट हो सके।

वर्तमान मे 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी एवं पुस्तकालय' सन् 2019 से 5-6, संस्थानिक क्षेत्र (इन्स्टीट्यूशनल एरिया), हरिमार्ग, मालवीय नगर, पाथेय भवन के निकट जयपुर में संचालित है। लगभग 30 वर्षों से पत्राचार के माध्यम से प्राकृत-अपभ्रंश के निम्न पाठ्यक्रम संचालित है।

1.पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम (1 जन. से 31 दिस.)
2. पत्राचार अपभ्रंश डिप्लोमा पाठ्यक्रम (1 अप्रैल से 30 जून)
3. पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम (1 जन. से 31 दिस.)
4. पत्राचार प्राकृत डिप्लोमा पाठ्यक्रम (1 अप्रैल से 30 जून)।

उपरोक्त पाठ्यक्रम सन् 2007 से राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। भारत के विद्यार्थियों के अतिरिक्त बेल्जियम, स्लोवेनिया, यूएसए, ऑस्ट्रेलिया, रूस आदि से विदेशी अध्ययनार्थी भी प्राकृत-अपभ्रंश भाषा सीखने के लिए आये हैं। इन पाठ्यक्रमों के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी से लगभग 25-30 पुस्तकें अंग्रेजी व हिन्दी में प्रकाशित हैं। यह हर्ष का विषय है कि यहाँ से 'अपभ्रंश भारती' पत्रिका प्रकाशित होती है। अभी तक इसके 26 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। अकादमी में पाण्डुलिपियों का संग्रहालय है। इसके अन्तर्गत पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र कार्यरत है जिसमें क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपियों का आधुनिक पद्धति से संरक्षण किया जाता है। इसके साथ ही पुस्तकालय भी संचालित है जिसमें प्राकृत-अपभ्रंश की पुस्तकों के साथ ही अन्य विषयों की पुस्तकें भी संग्रहित है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि यह अकादमी भारत की ही नहीं विश्व की पहली अकादमी है जो प्राकृत-अपभ्रंश के उत्थान के लिए सतत प्रयत्नशील है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-9413994340

-पूर्व प्रोफेसर दर्शनशास्त्र, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर,
संयोजक अपभ्रंश साहित्य अकादमी एवं पुस्तकालय

सीकर का लाल 'वायु सेना वीरता पदक' से सम्मानित

15 अगस्त, 2023 को भारी बारिश के कारण हिमाचल प्रदेश के महाराणा प्रताप सागर के बाढ़ गेट खोले गए, जिससे कांगड़ा जिले (हिमाचल प्रदेश) के गांव जलमग्न हो गए। प्रभावित क्षेत्रों में फंसे लोगों को बचाने के लिए भारतीय वायु सेना के विंग कमांडर दुष्यंत सिंह राठौड़ और उनकी टीम को मानवीय सहायता और आपदा राहत कार्यों के लिए तैनात किया गया। हवाई निरीक्षण के दौरान पाया गया कि सैकड़ों लोग बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में घरों और छतों पर फंसे हुए थे। विंग कमांडर राठौड़ ने ऊँचे टावर और बड़े व घने पेड़ों के निकट खतरनाक परिस्थितियों में सटीक होवर (हवा में एक जगह पर रहना/मंडराना) करते हुए फंसे हुए 40 लोगों को एयरलिफ्ट किया।

इस साहसिक कार्य के परिणामस्वरूप कई जानें बचाई गईं। बचाए गए लोगों में हृदय रोगी, गर्भवती महिलाएं, शिशु, बुजुर्ग और विशेष रूप से दिव्यांग व्यक्ति भी शामिल थे। पूरे मिशन के दौरान एक हजार से अधिक लोगों का बहुमूल्य जीवन बचाया गया था। असाधारण साहस, अद्वितीय उड़ान कौशल और व्यक्तिगत जोखिम के बाद बहुमूल्य जीवन बचाने के लिए, विंग कमांडर दुष्यंत सिंह राठौड़ को 'वायु सेना मेडल (वीरता)' की घोषणा बीती 26 जनवरी को की गई। दुष्यंत सिंह राठौड़ संघ के सीकर जिला संघचालक श्री चितरंजन सिंह राठौड़ के सुपुत्र है।

पाथेय कण के पाठकों का सम्मेलन

रेवदर (सिरोही) में 28 जनवरी को पाक्षिक पत्रिका 'पाथेय कण' का पाठक सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में रेवदर खंड के विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में पाठक शामिल हुए। संघ के जालौर विभाग कार्यवाह श्री दिनेश कुमार झाड़ोली ने पाथेय कण पत्रिका के बारे में जानकारी दी। बीते दिनों विद्याधर भाग (जयपुर), मथानिया (तिवरी खण्ड) और भादरा खण्ड (हनुमानगढ़) सहित अनेक स्थानों पर पाठक सम्मेलन होने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

प्रयागराज महाकुम्भ में उमड़ा श्रद्धा का ज्वार

प्रशासन के साथ संघ के स्वयंसेवकों ने संभाला मोर्चा

मौनी अमावस्या (29 जनवरी) के पावन अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु संगम स्नान के लिए प्रयागराज पहुँचे। जिससे रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड और घाटों पर काफी भीड़भाड़ हो गई। इसी दौरान एक दुर्भायपूर्ण घटना के कारण मेला क्षेत्र में कुछ समय के लिए अफरा-तफरी की स्थिति उत्पन्न हो गई।

इस संकटपूर्ण समय में संघ के स्वयंसेवकों ने तत्परता से कार्य करते हुए जनमानस को शांतचित्त रहने के लिए प्रेरित किया। स्नान करने आए श्रद्धालुओं को सुरक्षित उनके गंतव्य तक पहुँचने में सहायता की। सड़क किनारे स्थित दुकानदारों से संपर्क कर यात्रियों के लिए अस्थायी शौचालय की व्यवस्था, यात्रियों को विश्राम करने के लिए स्थानीय मंदिरों में के लिए रजाई-गद्दे उपलब्ध कराकर राहत दिलाई।

स्वयंसेवकों ने खोया-पाया केन्द्र में दिन-रात सेवाएं देते हुए खोए हुए लोगों को उनके परिजनों से मिलवाया तथा जरूरतमंद श्रद्धालुओं को गर्म कपड़ों की व्यवस्था भी की। इसी के साथ 16 हजार से अधिक स्वयंसेवकों ने पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर ट्रैफिक व्यवस्था में सहयोग किया।

पुस्तक समीक्षा

धन और अनुभव के बिना भी कमा सकते हैं लाखों

देश का युवा सरकारी नौकरियों के पीछे भाग रहा है। इसके लिए 'पेपर लीक करने वाले' अपराधी सरगने से संपर्क करने, उन्हें लाखों रुपये देने का अपराध करने को भी अनेक युवा तैयार हो जाते हैं। राजस्थान में ऐसे अनेक युवा आज जेल की सलाखों के पीछे हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'बनो उद्यमी' युवाओं को अपना स्वयं का व्यवसाय, व्यापार, उद्योग आदि प्रारंभ करने में हर प्रकार से सहायता करने और उन्हें सफल जीवन की ओर अग्रसर करने का एक अद्भुत-उल्लेखनीय प्रयास है।

पुस्तक के लेखकों का मानना है कि भले ही युवा की कोई व्यावसायिक पृष्ठभूमि न हो, भले ही उसके पास व्यवसाय के लिए आवश्यक अनुभव या धन न हो, तो भी वह एक सफल उद्यमी-व्यवसायी बन कर हजारों-लाखों रुपये प्रति माह कमा सकता है, यदि वह इस पुस्तक में दिए गए निर्देशों के आधार पर कार्य करना प्रारंभ करता है। लेखक द्वय द्वारा स्थापित 'प्योर इंडिया ट्रस्ट' ग्रामीणों, विशेष कर महिलाओं को उनके गांव और बस्तियों में छोटे व्यवसाय शुरु करने में सहायता करता रहा है। बताया जाता है कि अगस्त 2024 तक ट्रस्ट की सहायता से 14 राज्यों की 4,500 से ज्यादा महिलाएं अपने व्यवसाय से सालाना 30 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई कर रही है।

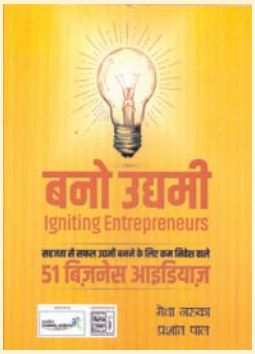

पुस्तक : बनो उद्यमी
लेखक: **मेधा नरूका/प्रशांत पाल**
मूल्य : 375 रुपए पृष्ठ : 121
मुद्रक : श्री विनायक प्रिंटर्स, जयपुर

समीक्षाधीन पुस्तक में , व्यवसाय कैसे शुरु करें, से लेकर विभिन्न 30 सरकारी व अन्य योजनाओं की चर्चा की गई हैं जहां से युवाओं को आर्थिक व अन्य सहयोग मिल सकता है। इस कार्य हेतु 'बिजनेस प्रपोजल' बनाना, अपने उत्पादन की ऑनलाइन बिक्री करना तथा व्यवसाय को ब्रांड कैसे बनाएं- इन सब पर पुस्तक में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर लिखा वाक्य 'अपना व्यवसाय शुरु करने का सबसे अच्छा समय कल था, दूसरा सबसे अच्छा समय आज है' से संभवत: युवा प्रेरणा ले सकें। लेखकों ने घोषित किया है कि 'इस पुस्तक से प्राप्त 100 प्रतिशत धन आर्थिक रूप से कमजोर युवाओं को उद्यमी बनाने एवं उनके बीच जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित किया जाएगा।' उनकी यह भावना स्तुत्य है और युवा पीढ़ी को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने व सहयोग करने के प्रयासों की सफलता की कामना की जानी चाहिए। नौकरी की दौड़ में शामिल युवाओं को एक बार इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

अमेरिका में 'जय श्रीकृष्ण'

हम में से बहुत से भारतीयों को किसी का अभिवादन करते समय 'जय श्रीराम' या 'जय श्रीकृष्ण' कहने में भले ही संकोच हो लेकिन जो भारतीय मूल के लोग विदेशों में रहते हैं, उन्हें अपनी हिन्दू संस्कृति पर गर्व है- ऐसा बहुधा दिखाई देता है। ऐसा ही एक दृश्य अमेरिका में पिछले दिनों आया। वहां के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रम्प ने एफबीआई (फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन) संस्था के प्रमुख के लिए भारतवंशी काश पटेल का नाम तय किया था। अमेरिका की व्यवस्था के अनुसार ऐसे नामित व्यक्ति को वहां की सीनेट (जैसे हमारे यहां 'राज्यसभा') की एक समिति के सामने प्रस्तुत होना होता है। जब काश पटेल इस समिति के सामने उपस्थित हुए तो उन्होंने समिति के सदस्यों का अभिवादन 'जय श्रीकृष्ण' कह कर किया। इस अवसर पर भारत से गए अपने माता-पिता और बहिन का भी उन्होंने आभार व्यक्त किया तथा सबसे उनका परिचय कराया।

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(1 से 15 मार्च, 2025)
(फाल्गुन शु. 2 से चैत्र कृ.1 तक)

जन्म दिवस

फाल्गुन शु.2(1 मार्च)- श्रीरामकृष्ण परमहंस
2 मार्च (1917)- इतिहासकार पीएन ओक
फाल्गुन शु.5(4 मार्च)- याज्ञवल्क्य
फाल्गुन शु.6(5 मार्च)- माता शबरी
फाल्गुन शु.8(7 मार्च)- संत दादूदयाल जयंती
फा. पूर्णिमा(14 मार्च)- चैतन्य महाप्रभु/मीराबाई
14 मार्च (1884)- शंकराचार्य भारतीकृष्ण तीर्थ

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

1 मार्च (1924)- गोपीमोहन साहा का बलिदान
6 मार्च (1897)- पं. लेखराम का बलिदान
9 मार्च (1994)- राष्ट्र सेविका समिति की द्वितीय संचालिका सरस्वती ताई आप्टे की पुण्यतिथि
11 मा.(1689)- छत्रपति सम्भा जी का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

7 मार्च (1922)-नीमड़ा का नरसंहार (सिरोही)
8 मार्च (1535)- चित्तौड़ का दूसरा साका
फाल्गुन पूर्णिमा (14 मार्च)- महाराणा प्रताप का महादेव बावड़ी (गोगुन्दा)पर राजतिलक
14 मा.(1823)-बाबा फूलासिंह की पेशावर विजय

सांस्कृतिक पर्व

13 मार्च- होलिका दहन,
14 मार्च- धूलण्डी,गणगौर पूजा प्रारम्भ

सबद सवामणी (रामदेव पचासो)

■ शिवराज भारतीय

दोहा : **रूणेचै रै नाथ नै, सदा नवाऊं माथ।**
सगळां रा संकट हरै, कदे न छोडै साथ।।
(भावार्थ : सब जन के कष्टों को दूर करने वाले रुणेचा के स्वामी रामदेव जी को मैं मस्तक नवाकर सदैव नमन करता हूं। सबकी सहायता करने वाले रामदेव जी अपने भक्तों का कभी भी साथ नहीं छोड़ते।)

मिनख-मिनख सै एक है, कोई ऊंच न नीच।
भाईपै री सीख दी, ध्यांऊं नैणां मीच।।
(आपने सदैव भाईचारा बढ़ाने की सीख देते हुए बताया कि, सभी मनुष्य समान है। कोई भी मनुष्य ऊंचा या नीचा नहीं है । मैं आपकी छवि को नेत्रों में धारण कर आपका ही ध्यान करता हूं।)

चौपाई

खमा-खमा रामा अवतारी।
दुनिया आई सरणैं थांरी।।
(हे अवतार पुरुष रामदेव जी, आपका सादर अभिवादन, नमन । यह समस्त संसार आपकी ही शरण में आया है।)

अजमल सुत मैणांदे जाया।
विष्णु रा औतार कुहाया।।
(मां मैणांदे और अजमल जी के पुत्र रामदेव जी आप साक्षात भगवान विष्णु के अवतार हैं।)

कूं-कूं पगल्यां प्रभु पधार्या।
भगतां रा थे कारज सार्या।।
(अपने भक्तों के सभी कार्यों को सिद्ध करने वाले प्रभु रामदेव जी ने जब अवतार लिया तो अजमल जी के घर - आंगन में स्वत: ही बालक के कुम-कुम पद - चिन्ह अंकित हो गए।)

धवळ धजा संग नेजो धारी।
लीलै घोड़ै करो सवारी।।
(आपने श्वेत ध्वजा और हाथ में भाला धारण किया। आप नीले घोड़े पर सुशोभित सवारी करते हैं ।)

छुआछूत रो रोग मिटायो।
हरजी भाटी हरख मनायो।।
(आपने समाज में फैले छुआछूत व ऊंच -नीच रूपी रोग को समाप्त किया। आपके अनुयायी हरजी भाटी इस सद्कार्य से बहुत प्रसन्न हुए।)

मिनख-मिनख सै भाई-भाई।
सैं में उणरी जोत समाई।।
(आपने सभी में यह प्रेरणा जगाई कि, सभी मनुष्य उस परमपिता परमात्मा की संतान हैं। आपस में भाई-भाई हैं। सभी में एक ही ज्योत का उजाला है।)

छोटो-बडो न कोई होवै।
सतकरमी दाता मन-मोवै।।
(जाति से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। मनुष्य अपने सत्कर्मों के द्वारा ही परमात्मा को प्रसन्न कर सकता है। ईश्वर का मन मनुष्य द्वारा किए गए सद्कार्यों से ही मोहित होता है।)

घणी सांतरी सीख सिखाई।
परमाणी चौबीस बताई।।
(रामदेव जी ने चौबीस प्रमाणों के माध्यम से समाज को अध्यात्म व सद्कर्मों की सीख दी।)

कोढी-दुरबळ विकलंग-रोगी।
थे सगळां नै कर्या निरोगी।।
(समाज में कुष्ठ रोगी, विविध रोगों से ग्रस्त, विकलांग व दुर्बल जन को आपने ही पूर्ण स्वस्थ व निरोगी बनाया।)

घर-घर होवै थांरी चरचा।
रामदेवजी दीन्या परचा।।
(रामदेव जी द्वारा उपचार करने व सबके साथ आत्मीय व्यवहार की चर्चा पूरे समाज में होने लगी। आपने अनेक चमत्कार भी दिखलाए।)

क्रमश:

(लेखक ने इस स्वरचित रचना का गायन जोधपुर प्रांत में आयोजित 'बाबा रामदेव समरसता यात्रा' के अवसर पर किया)

महर्षि विश्वामित्र

■ इंदुशेखर 'तत्पुरुष'

अपनी तपस्या के बल पर राजा से ऋषि बनने वाले विश्वामित्र कान्यकुब्ज के महाराजा गाधि के पुत्र थे। ऋषि पद प्राप्त करने से पूर्व ये एक बार अपनी सेना के साथ महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में ठहरे तो वहां दिव्य शक्ति सम्पन्न गाय नंदिनी को देखकर उसे प्राप्त करने के लिए इनका वसिष्ठ से संघर्ष हो गया। वसिष्ठ की तपस्या शक्ति के सामने जब इनका संपूर्ण सैन्यबल पराजित हो गया तो इन्होंने भी तपोबल प्राप्त करने की ठान ली और ये अपना राजपाट छोड़कर घोर तपस्या में रत हो गए। तपस्या करते हुए विश्वामित्र ने क्रमशः राजर्षि और देवर्षि पद प्राप्त कर लिए किन्तु अपनी तपस्या जारी रखी। इनका लक्ष्य ब्रह्मर्षि पद प्राप्त करना था। अंततः इनके कठोर तप से प्रभावित हो कर स्वयं वसिष्ठ ने इनको ब्रह्मर्षि के रूप में स्वीकार कर लिया।

विश्वामित्र अनेक वेद मंत्रों के दृष्टा ऋषि थे। इनसे संबंधित मन्त्रों में गायत्री मंत्र सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

महर्षि विश्वामित्र साहसिक प्रयोगों के अकेले ऋषि थे जिन्होंने तपस्या के बल पर अनेक विलक्षण कार्य सम्पन्न किए। इक्ष्वाकु वंश के राजा त्रिशंकु, जो अयोध्या के राजा हरिश्चंद्र के पिता थे, को सशरीर स्वर्ग पहुँचाने के लिए जब कोई महर्षि तैयार नहीं हुआ तो विश्वामित्र ने उनके लिए यज्ञ का अनुष्ठान किया। इन्द्र ने उनको स्वर्गलोक में प्रवेश नहीं दिया तो विश्वामित्र ने नए लोकों की सृष्टि कर त्रिशंकु को वहां स्थापित कर दिया।

त्रेता युग में विश्वामित्र यज्ञ और जंगल की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को अपने साथ वन में ले गए तथा उनसे राक्षसों का वध करवाया। श्रीराम ने विश्वामित्र की प्रेरणा से ही अहल्या उद्धार और सीताजी से विवाह किया।

विश्वामित्र का जीवन चरित बाहुबल के ऊपर ब्रह्म बल की विजय का तथा विश्व कल्याण के लिए तपस्या का संदेश देता है।

– लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं

सोशल मीडिया का असर : डरावने सपने, चिंता और पर्याप्त नींद का अभाव

हंगरी, ईरान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के शोधकर्ताओं के अनुसार सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग न केवल हमारे जागते समय को प्रभावित करता है, बल्कि हमारी नींद और सपनों पर भी गहरा प्रभाव डालता है। शोध में सामने आया कि जो लोग सोने से पहले सोशल मीडिया पर ज्यादा समय बिताते हैं, इनमें से 68 प्रतिशत को डरावने सपने आ रहे हैं। वहीं 60 प्रतिशत में चिंता का स्तर उपयोग के बाद बढ़ा है। इसके अलावा 55 प्रतिशत लोग पर्याप्त नींद नहीं ले पा रहे हैं जिससे उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

कुकिंग / किचन टिप्स

दूध में 1 से 2 इलायची तोड़कर डाल देने से यह लंबे समय तक ताजा बना रहता है।

घरेलू नुस्खा

खट्टी डकारें, गैस बनना, पेट फूलना, भूख न लगना इनमें से किसी चीज से परेशान हैं तो सिरके में प्याज और अदरक पीसकर चटनी बनाएं, इसमें काला नमक मिलाकर एक सप्ताह तक प्रतिदिन भोजन के साथ लें, आराम मिलेगा।

गीता- दर्शन

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च।।
(14/2)

श्रीकृष्ण कहते हैं- हे अर्जुन! इस (दिव्य)ज्ञान को आश्रय करके अर्थात् धारण करके मेरे स्वरूप (गुणों) को प्राप्त हुए पुरुष (साधक) सृष्टि के आदि में पुनः उत्पन्न नहीं होते और प्रलय काल में भी व्याकुल (नष्ट) नहीं होते हैं।

आओ संस्कृत सीखें-50

■ वैवाहिक जीवन शुभकारी हो।
वैवाहिकजीवनं शुभं भवतु।

दिवस

3 मार्च : विश्व वन्य जीव दिवस
4 मार्च : राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
8 मार्च : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
15 मार्च : विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. लंका में राक्षसराज रावण के राजवैद्य कौन थे?
2. 'यक्षगान' किस राज्य का लोकनृत्य/ नाट्य है?
3. चित्तौड़गढ़ का विजय स्तम्भ मेवाड़ के किस राजा ने बनवाया था?
4. 'दक्षेस' का मुख्यालय कहां स्थित है?
5. राष्ट्रपति भवन के 'दरबार हॉल' का नाम बदलकर क्या रखा गया है?
6. 'कलिंग पुरस्कार' किस क्षेत्र में यूनेस्को द्वारा दिया जाता है?
7. किस नदी को 'बिहार का शोक' कहा जाता है?
8. केसर का सर्वाधिक उत्पादन किस राज्य में होता है?
9. यूनेस्को द्वारा भारत का पहला 'साहित्य शहर' किसे घोषित किया गया है?
10. 'मेघदूत' किस रचनाकार की प्रसिद्ध कृति है?

उत्तर इसी अंक में...

कथा

अपवित्र धन

महान विद्वान पंडित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर कुशल चित्रकार भी थे। चित्रकला के माध्यम से ही वह अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे।

एक दिन उनके मन में आया कि अपनी मातृभमि को स्वतंत्र कराने के लिए उन्हें वेद-ज्ञान के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में योगदान करना चाहिए। उसी दिन से उन्होंने चित्र बनाने बंद कर दिए और अपना अधिकतर समय वेदों के प्रचार-प्रसार में लगाना शुरु कर दिया।

लोगों को इकट्ठा कर उन्हें वेद-ज्ञान के साथ-साथ देश को स्वतंत्र कराने के लिए एकता का पाठ पढ़ाने लगे। अनेक लोग उनके साथ हो गए। लेकिन इससे उनके परिवार के सामने आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।

आर्थिक संकट की बात सुनकर एक दिन एक व्यक्ति उनके पास आया और उनके सामने ढेर सारे रुपए रखकर बोला, ''पंडित जी, आप हमारे नगर के रायबहादुर का चित्र बना दीजिए और इन रुपयों को एडवांस समझ कर रखिए। चित्र पूरा होने पर आपको और अधिक रुपए दिए जाएंगे जिससे आपका आर्थिक संकट दूर हो जाएगा।''

व्यक्ति की बात सुनकर सातवलेकर बोले,''रायबहादुर की उपाधि प्राप्त किसी अंग्रेजपरस्त व्यक्ति का चित्र बनाकर उससे मिले अपवित्र धन को मैं स्पर्श भी नहीं कर सकता। आप इन रुपयों को उठाइए और यहां से चले जाइए'' वह व्यक्ति संकट में भी पंडित जी की देशभक्ति की भावना को देखकर उनके प्रति श्रद्धा से भर उठा।

जंगली जानवरों के नाम खोजिए

ची	भे	श्री	ची	बं	बा	तें
ता	री	ड़ि	हि	द	शे	दु
लो	अ	सि	या	र	दू	आ
म	ज	पा	ना	फ	ण	ढ
ड़ी	ग	द	टा	रा	भा	लू
ख	र	गो	श	जि	हा	ची
म	ग	र	म	च्छ	थी	पा

चीता, भेड़िया, सियार, अजगर, हिरण, हाथी, खरगोश, भालू, लोमड़ी, बंदर, मगरमच्छ, जिराफ, शेर, तेंदुआ

बाल प्रश्नोत्तरी - 69

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 16 दिसम्बर का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **05 मार्च , 2025**

1. बांग्लादेश के वर्तमान प्रधानमंत्री का नाम बताइए?
(क) मो. यूनुस (ख) मो. यूसुफ (ग) मो. यासिर (घ) मो. आरिफ

2. लोकमंथन के चतुर्थ संस्करण का आयोजन कहां हुआ था?
(क) दिल्ली (ख) भाग्यनगर (ग) हरियाणा (घ) विजयनगर

3. वर्ष 2016 में किस शहर से लोकमंथन की शुरुआत हुई थी?
(क) जयपुर (ख) जबलपुर (ग) भोपाल (घ) मुंबई

4. भगवान धन्वन्तरी को किस चिकित्सा पद्धति का जनक माना जाता है?
(क) एलोपैथी (ख) होम्यापैथी (ग) यूनानी (घ) आयुर्वेद

5. भरतपुर के किस दुर्ग को अजेय कहा जाता है?
(क) लोहागढ़ (ख) मेहरानगढ़ (ग) जयगढ़ (घ) चित्तौड़गढ़

6. सुंईया पौष मेला राजस्थान के किस जिले में आयोजित होता है?
(क) जैसमलेर (ख) बाड़मेर (ग) जोधपुर (घ) डूंगरपुर

7. 'समरसता पाथेय' का सम्पादन किसके द्वारा किया गया है?
(क) बृजकिशोर (ख) बृजमोहन (ग) बृजनंदन राजू (घ) ब्रजराज

8. 'द ढूंढाड़ टॉक्स' का आयोजन किस शहर में किया गया ?
(क) उदयपुर (ख) अजमेर (ग) टोंक (घ) जयपुर

9. आईक्यू लेवल प्रतिस्पर्द्धा में विजेता भारतवंशी कौन हैं?
(क) कृष अरोड़ा (ख) कश्यप अरोड़ा (ग) किशन अरोड़ा (घ) कमल अरोड़ा

10. दक्षिण की काशी किस शहर को कहा जाता है?
(क) सतपुड़ा (ख) कांचीपुरम् (ग) कांजीवरम् (घ) काशीपुरम्

बिंदुओं को जोड़ो

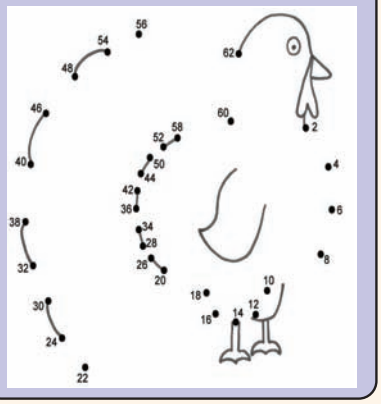

बाल प्रश्नोत्तरी-67 के परिणाम

पारूल ईशान तन्मय नवज्योत रविन्द्र

1. पारूल सैनी, राजगढ़, अलवर
2. ईशान जैन, शाहपुरा, भीलवाड़ा
3. तन्मय सिंह राठौड़, मेड़ता, नागौर
4. नवज्योत वर्द्धन सिंह, सरदारपुरा, बाड़मेर
5. रविन्द्र सिंह राव, केलवा, राजसमन्द
6. हेमाद्री भड़ाना, कोटपूतली- बहरोड़
7. मुग्धा अग्रवाल, हनुमान तिराहा, धौलपुर
8. हिंमाशू शर्मा, बिहारी गंज, अजमेर
9. मौलिक सेवग, नोखा, बीकानेर
10. महिपाल सिंह, गडरारोड, बाड़मेर

सही उत्तर
1. (क)
2. (क)
3. (ख)
4. (क)
5. (ग)
6. (घ)
7. (क)
8. (क)
9. (ग)
10.(घ)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 69)
(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

कोटा : चाहिए संस्कारों को स्थापित करने वाली कहानियां

गत 27 जनवरी को साहित्य परिषद कोटा इकाई द्वारा 'कुटुम्ब प्रबोधन' विषय पर कहानी प्रतियोगिता आयोजित हुई। बड़ी संख्या में उपस्थित साहित्य प्रेमी, विद्यार्थी और गणमान्यजनों को सम्बोधित करते हुए अ.भा.साहित्य परिषद के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री मनोज कुमार ने कहा कि वर्तमान समय वैचारिक संक्रमण का है जिसमें जीवन मूल्यों और संस्कारों को स्थापित करने वाली कहानियों की महती आवश्कता है। हमें ऐसा साहित्य सृजित करना होगा, जो नैतिक मूल्यों से प्रेरित हो, जिसे पढ़कर युवा भारतीय संस्कृति पर गर्व करें।

कोटा : कालबेलिया बस्ती में भारत माता पूजन

सेवा भारती सुल्तानपुर नगर (कोटा) की कालबेलिया बस्ती में संचालित बाल संस्कार केन्द्र पर 22 जनवरी को भारत माता पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पंचांग- फाल्गुन (कृष्ण पक्ष) 13 से 27 फरवरी, 2025 तक

चतुर्थी व्रत - 16 फरवरी, **कालाष्टमी**-20 फरवरी, **विजया एकादशी व्रत**-24 फरवरी, **भोमप्रदोष व्रत**- 25 फरवरी, **महाशिवरात्रि व्रत**-26 फरवरी, **पंचक प्रारम्भ**-26 फरवरी (प्रात: 4: 37 बजे), **देवपितृकार्य अमावस्या**- 27 फरवरी

चन्द्रमा : 13 से 15 फरवरी **सिंह** राशि में, 16-17 फरवरी **कन्या** राशि में, 18 से 20 फरवरी **तुला** राशि में, 21-22 फरवरी नीच की राशि **वृश्चिक** में, 23-24 फरवरी **धनु** राशि में, 25-26 फरवरी **मकर** राशि में तथा 27 फरवरी को **कुंभ** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रह स्थिति : फाल्गुन कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत क्रमश: वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमश: मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** कुंभ राशि में तथा **शुक्र** मीन राशि में यथावत रहेंगे। **वक्री मंगल** 24 फरवरी को प्रात: 7:31 बजे मिथुन राशि में रहते हुए मार्गी होंगे। **बुध** 27 फरवरी को रात 11:46 बजे कुंभ से मीन राशि में प्रवेश करेंगे।

उत्तर : जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?-1.सुषेण 2. कर्नाटक 3.राणा कुंभा 4. काठमाण्डू (नेपाल) 5.गणतंत्र मंडप, 6.विज्ञान 7.कोसी 8.जम्मू-कश्मीर 9. कोझिकोड(केरल) 10.महाकवि कालिदास

श्री बहादुर सिंह भानकंवर आदर्श विद्या मंदिर का लोकार्पण

सरदारशहर

गत 28 जनवरी को सरदारशहर में 'श्री बहादुर सिंह भानकंवर आदर्श विद्या मंदिर' का लोकार्पण हुआ। इस विद्यालय के भवन का निर्माण भामाशाह श्री जितेन्द्र सिंह शेखावत और लक्ष्मीदेवी शेखावत ने कराया है। लोकार्पण के अवसर पर इनको सम्मानित किया गया।

लोकार्पण समारोह के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने मातृभाषा में शिक्षा तथा संस्कारवान शिक्षा पर जोर दिया। मुख्य अतिथि श्रीमती दीया कुमारी (उपमुख्यमंत्री, राज.सरकार) ने जहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सरकार की प्रतिबद्धता प्रकट की वहीं विशिष्ट अतिथि श्री मदन राठौड़ (भाजपा प्रदेशाध्यक्ष) ने बच्चों की प्रतिभा के अनुरूप उन्हें अपना करियर चुनने की स्वतंत्रता देने की बात की। इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्री राजेन्द्र राठौड़ एवं पैरालिंपिक समिति के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र झाझड़िया ने भी समारोह को संबोधित किया।

जयपुर

फोटो -राजेश कुमावत

1 फरवरी को सेवा भारती समिति द्वारा सेवा सदन में नर्सिंग सहायक प्रशिक्षण केन्द्र एवं ड्राइविंग विद्यालय का उद्घाटन करते हुए संघ के अ.भा.सह प्रचारक प्रमुख श्री अरुण कुमार जैन। संघ के राज. क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम व राज.सरकार के मंत्री श्री अविनाश गहलोत भी उपस्थित थे।

जोधपुर

सेवा भारती समिति, जोधपुर की ओर से गत 2 फरवरी को सर्वजातीय सामूहिक विवाह समारोह में 23 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। मुख्य वक्ता थे राष्ट्रीय सेवा भारती से अ.भा.स्वावलम्बन प्रमुख श्री विनोद कुमार बिड़ला।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

आओ महाकुम्भ चलें

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

अयं कुम्भः परं पुण्यं स्नानं येन कृतं शुभम् ।
सर्वपापक्षयं याति गच्छति विष्णुसन्निधिम् ।।
(विष्णु पुराण)

सनातन का महापर्व | **अखण्डता का महाकुम्भ**

13 जनवरी – 26 फरवरी, 2025

• प्रमुख स्नान •

मौनी अमावस्या	बसंत पंचमी	माघ पूर्णिमा	महाशिवरात्रि
29 जनवरी	03 फरवरी	12 फरवरी	26 फरवरी

• प्रदेशवासियों के लिए महाकुम्भ में उपलब्ध सुविधाएं •

निःशुल्क आवास व्यवस्था | निःशुल्क भोजन व्यवस्था | निःशुल्क चिकित्सा व्यवस्था

स्थान :- राजस्थान मण्डप, प्लॉट नम्बर 97, सेक्टर-07, कैलाशपुरी मार्ग (प्रयागराज)

नियंत्रण कक्ष, प्रयागराज - 99298 60529, 98878 12885

राजस्थान संवाद

राज्य नियंत्रण कक्ष : 0294-2426130

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

पाक्षिक
पाथेय कण
16-28 फरवरी, 2025
(10 फरवरी को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

Springboard ACADEMY
AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

We Bring The Best Out Of You

The Mentors who will take you to success

Sunil Punia Sir

Narendra Sir

Rajveer Sir

Dileep Mahecha
Director

Vijay Sir

Lakshita Ma'am

Vijay Sihag Sir

IAS/ RAS में नियमित सर्वश्रेष्ठ परिणाम स्प्रिंगबोर्ड की उत्कृष्टता का प्रमाण है।

RAS | PSI

FOUNDATION BATCH

8 फरवरी से बैच प्रारम्भ Online & Offline

Direct Live from Classroom

RAS MAINS
11 फरवरी से बैच प्रारम्भ

Interview Batch
5 फरवरी से प्रारम्भ
सायं 5:00 बजे से

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur
9636977490, 0141-3555948

ऐप डाउनलोड करने के लिए
QR Code स्कैन करें
GET IT ON Google Play

Contact us- Springboard Academy Online Springboard Academy Jaipur

स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध The Notes Hub 7610010054, 7300134518

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 फरवरी, 2025 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,